



शकरकंद की उन्नत खेती

आदित्य तिवारी*, डी.पी. राय**, और श्रेया तिवारी***

शकरकंद प्राकृतिक रूप से मीठी जड़ वाली कंदवर्गीय फसल है। यह एक सपुष्पक पौधा है। इसकी रूपान्तरित जड़ की उत्पत्ति तने के पर्वसन्धियों से होती है। यह जमीन के अन्दर प्रवेश कर फूल जाती है और फूली हुई जड़ में काफी मात्रा में कार्बोहाइड्रेट इकट्ठा हो जाता है। जड़ का रंग लाल या भूरा होता है एवं यह अपने अन्दर आहार संग्रह करती है। यह आलू की प्रजाति का सदस्य है, परन्तु इसमें मिठास एवं स्टार्च की मात्रा आलू से अधिक होती है।

भारत सहित पूरी दुनिया में शकरकंद को पसंद किया जाता है। विश्व में सबसे अधिक शकरकंद का उत्पादन करने वाला देश चीन है। शकरकंद के उत्पादन में भारत छोटे स्थान पर है। देश में लगभग 2 लाख हैक्टर में इसकी खेती होती है। इसके निर्यात में लगातार वृद्धि हो रही है। यह पूरे वर्ष उगाई जाने वाली फसल है, परन्तु मुख्य रूप से यह सर्दियों में अधिक होती है। इसके पत्ते हृदय के आकार के होते हैं। इसके प्रमुख उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल हैं। शकरकंद को भूनकर या उबालकर खाया जाता है। लोग इसकी सब्जी बनाकर भी खाते हैं। इसमें पर्याप्त मात्रा में विटामिन पाया जाता है। इसके सेवन से बालों की वृद्धि होती है तथा चेहरे पर चमक आती है। यह कई रोगों के उपचार में लाभदायक है। शकरकंद की मांग एवं होने वाली आय ने भारतीय किसानों का ध्यान आकर्षित किया है। इसकी उन्नत

खेती किसानों के लिए अच्छी आय का स्रोत बन सकती है।

मृदा, जलवायु एवं तापमान

शकरकंद की खेती के लिये बलुई दोमट मृदा तथा उचित पानी के निकास वाली भूमि अच्छी मानी जाती है। खेत को अच्छी तरह से मिट्टी पलटने वाले हल से 2-3 बार जुताई कर तैयार कर लें एवं बुआई के पूर्व कुछ समय के लिये खेत को छोड़ दें जिससे सूर्य की धूप अच्छे से लग जाये। इसकी खेती के लिये भुरभुरी मिट्टी होनी चाहिए। खेत से पुरानी फसल के अवशेष पूरी तरह नष्ट कर दें। पथरीली एवं कठोर भूमि इसकी खेती के लिये अच्छी नहीं होती क्योंकि ऐसी भूमि में पैदावार कम होती है। इसकी खेती के लिये भूमि का पीएच मान 5.5 से 6.8 उपयुक्त रहता है।

शकरकंद की खेती तीनों ही मौसमों में की जा सकती है। बारिश तथा गर्मी में इसके पौधे अधिक विकसित होते हैं। जबकि सर्दियों का मौसम पौधों के विकास के लिये उपयुक्त नहीं रहता। सामान्यतः इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। इसकी खेती के लिये 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा माना जाता है।

उन्नत किस्में

सामान्यतौर पर शकरकंद सफेद, लाल एवं पीले रंग के मिलते हैं। इसकी उन्नत किस्में, पीली प्रजाति, सफेद प्रजाति और लाल प्रजाति की शकरकंद, एसटी 13, एसटी 14, भू कृष्ण, श्री अरुण, भू सोना आदि प्रमुख किस्मों के साथ श्री रतना, सी.ओ. 1, 2, श्री नंदिनी, श्री वर्धनी, भुवन शंकर, हैं। इनका उपयोग भूमि एवं मौसम के अनुसार करना चाहिए।

बुआई

शकरकंद की रोपाई में पंक्तियों की आपस में दूरी 60 सें.मी. और पौधों से पौधे की दूरी 30 सें.मी. रखें। गांठों की बिजाई में 20-25 सें.मी. गहराई उचित मानी गई है। प्रति एकड़ 25000-30000 कटी हुई बेलों या 280 से 320 किलो गांठों की आवश्यकता होती है। बुआई के पूर्व गांठों को प्लास्टिक बैग में रखकर सल्फ्यूरिक एसिड में 10-40 मिनटों तक भिगोकर रखें।

सिंचाई एवं जल प्रबंधन

फसल के प्रारम्भ में शकरकंद को अधिक पानी की जरूरत होती है। गर्मी के मौसम में रोपाई करने पर पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इस समय

*ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, सतना, म.प्र.; **प्रोफेसर एवं अधिष्ठाता, कृषि संकाय; ***एमएससी छात्रा (कृषि प्रसार), म.गां.चि.गां.वि., चित्रकूट, सतना, म.प्र.

रोपाई के तुरन्त बाद पानी देना उचित रहता है। समय के साथ पानी की मात्रा कम कर सकते हैं एवं विकास के दौरान सप्ताह में एक बार पानी दे सकते हैं। कंदों के अच्छे विकास के लिये खेत में नमी बनी रहनी चाहिए। खरीफ की फसल के साथ रोपाई में अधिक पानी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। शकरकंद में सिंचाई पौधों की आवश्यकता के अनुसार करते रहना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

इसकी खेती में कार्बनिक खाद का प्रयोग विशेषज्ञों की संस्तुति के आधार पर करें। इससे उत्पादकता अच्छी और स्थायी बनी रहती है। गोबर की सड़ी हुई खाद 7-8 टन खेत की तैयारी की प्रथम जुताई के समय ही भूमि में मिला देनी चाहिए। यदि मिट्टी में अम्लीयता अधिक हो तो 500 किलोग्राम चूने का प्रयोग प्रति हैक्टर की दर से करने से कंद का विकास अच्छा होता है।

रासायनिक उर्वरकों में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटेश का क्रमशः 50: 25: 50 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें। ध्यान दें कि नाइट्रोजन की आधी मात्रा फॉस्फोरस व पोटेश की पूरी मात्रा लता लगाने के समय प्रारम्भ में ही जड़ों में दें। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में बांटेकर प्रथम 15 दिनों में तथा अगला हिस्सा 45 दिनों में टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें। मैग्नीशियम सल्फेट, जिंक सल्फेट और बोरॉन का प्रयोग 25:15:10 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से



शकरकंद की विविध किस्में

इस्तेमाल करने पर कंदों का आकार समान रहता है तथा कंद फटते नहीं हैं।

खरपतवार एवं मिट्टी चढ़ाना

शकरकंद की खेती में खरपतवार नियंत्रण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक तरीके से नियंत्रण हेतु निराई-गुड़ाई करके खरपतवार को निकाल देना चाहिए। इसके पौधों के लिये 2 गुड़ाई पर्याप्त हैं। प्रथम गुड़ाई अंकुरण के 20 दिनों बाद एवं दूसरी प्रथम गुड़ाई से अगले 20 दिनों में करनी चाहिए। रासायनिक तरीके से नियंत्रण के लिये कंदों के अंकुरण से पूर्व मेट्रीबिजाइन और पैराक्वाट की संस्तुत मात्रा का छिड़काव करें। इसकी खेती में अधिक खरपतवार का फैलाव नहीं हो पाता है क्योंकि जब शकरकंद की लताएं फैल जाती हैं तो खरपतवार का जमाव नहीं हो पाता। शकरकंद में पौधों में रोपाई के एक माह पश्चात पहली बार गुड़ाई के समय मिट्टी चढ़ाने का कार्य होना चाहिये। मिट्टी कम से कम 3 बार चढ़ानी चाहिए। मिट्टी चढ़ाने से कंदों का आकार अच्छा रहता है एवं उत्पादन में वृद्धि होती है।

प्रमुख रोग: शकरकंद में कई तरह के कीट एवं जीवाणुजनित रोग देखने को मिलते हैं। इनकी रोकथाम विशेषज्ञों की सलाह पर समय रहते करना आवश्यक है जिससे उत्पादन प्रभावित न हो। इसमें लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग माहूँ, शकरकंद का घुन, अर्ली ब्लाइट, फलबेधक आदि हैं।

खुदाई एवं उत्पादन क्षमता

शकरकंद, पौधों की रोपाई से लगभग 110 से 120 दिनों में खुदाई के योग्य हो जाता है। इस समय पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं तथा गिरने लगती हैं। खेत में नमी होने पर खुदाई करने में सुविधा होती है। कंदों को सफाई के पश्चात छायादार जगह में सुखा दें। अच्छी तरह सूख जाने पर भण्डारण करें। इसकी पैदावार किस्मों के अनुसार अलग-अलग होती है, परन्तु सामान्यतौर पर इसका औसत उत्पादन 25 टन प्रति हैक्टर रहता है। इस प्रकार शकरकंद की उन्नत खेती से किसान अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका 'खेती' जून, 2024 अंक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ मीठे पानी में मोती पालन
- ◆ समन्वित कृषि प्रणाली है फायदेमंद व्यवसाय
- ◆ तना एवं मटर की उन्नत प्रजातियां
- ◆ मृदा में सल्फर की कमी दूर करे यूरिया गोल्ड
- ◆ गौ-आधारित प्राकृतिक खेती
- ◆ टिकाऊ खाद्य उत्पादन के लिए एकीकृत कृषि
- ◆ एववापोनिक्स विधि से मछलीपालन
- ◆ पोषण से भरपूर केंचुआ खाद
- ◆ फसल उत्पादकता पर उच्च क्यारी शेपण का प्रभाव
- ◆ कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपयोगिता

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in